REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

बिल क्लिंटन के काल में भारत पर वैश्वीकरण का प्रभाव

शबनम सिन्हा
राजनीति विज्ञान , विनोबा भावे यूनिवर्सिटी हजारीबाग, झारखण्ड.

परिचय –

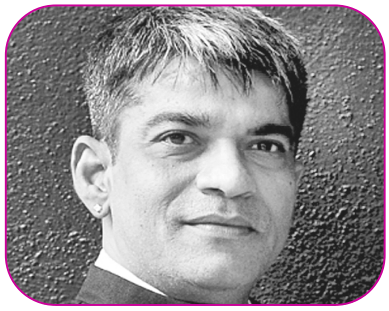

भारत को प्राचीन काल से ही दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने का गौरव प्राप्त है।[1]

इसलिए वैश्वीकरण की अवधारणा भारत के लिए नया नहीं है। वैश्वीकरण शब्द ''वैश्विक'' से निकला है जो पूरी दुनिया को कवर करता है। वैश्वीकरण कुछ विशेष देशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका मतलब पूरी दुनिया से संबंधित है। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ; पूरी दुनिया को कवर करता है। वैश्वीकरण कुछ विशेष देशों तक ही सीमित नहीं बल्कि इसका मतलब पूरी दुनिया से संबंधित है। आधुनिक विज्ञान और प्रोद्योगिक के विकास के साथ पूरी दुनिया को एक वैश्विक गांव के रूप में एक जुट कर दिया गया है। जो एक देश में होता है उसका प्रभाव दूसरे देशों पर भी पड़ता है।[2]

भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव :

भारत की नई अर्थव्यवस्था को आत्म : निर्भरता न प्राप्त हो सके इसलिए भारत को 1991 के उदारीकरण तक जानबूझ कर दुनिया के बाजारों से अलग रखा गया। भारत का विदेशी व्यापार, आयात शुल्क, करों और निर्यात मात्रात्मक प्रतिबंधों के प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण निर्यात दायित्वों और सरकारी मंजूरी पर प्रतिबंध था। इन औद्योगिक क्षेत्र में नई प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगभग 60% मंजूरी आवश्यक था।[3]

भारत कई अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से संस्थापक देशों में से एक है– संयुक्त राष्ट्र, एशियाई विकास बैंक, जी–20 और गुटनिरपेक्ष आंदोलन का संस्थापक देश है। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भूमिका निभाई है–

पूर्ण एशिया शिखर सम्मेलन, विश्व व्यापार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जी–8+1 =9 और इब्सा वार्ता मंच। [4]

1947 से ही भारत अन्तर्राष्ट्रीय संगठन General Agreement of Tarrifs and Trade (GATT) और World Trade Organisation (WTO) का प्रमुख संस्थापक देशों में से एक देश रहा है।

इसके सामान्य परिषद की बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है। विकास शील देशों का प्रतिनिधि बनकर विकास शील देशों की चींताओं को भारत व्यक्त करता रहा है। उदाहरण के लिए भारत विश्व व्यापार संगठन में श्रम और पर्यावरण तथा गैर टेरिफ बाधाओं के विषय को WTO में शामिल करने पर हमेशा विरोध करता रहा है। [5]

सार्वजनिक क्षेत्र के प्रकार लाभदायक परिणाम का उत्पादन करने में विफल रहा है और बड़े पैमाने पर नुकसान हो रहा था। भारत में भी ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो गई थी स्थिति पर काबु पाने के लिए भारतीय प्रधानमंत्री पी0बी0 नरसिम्हा राव की सरकार ने उदारीकरण और नीजीकरण की नई आर्थिक नीति को अपनाया। [6]

प्रधानमंत्री पी0बी0 नरसिम्हा राव सरकार द्वारा शुरू किए गए परन्तु बीच में ही ठप कर दिए गए अभियान को सरकारी स्वामित्व वाली कंपनियों का नीजीकरण कर सरकारी कर्मचारियों का गुस्सा भी झेला। [7]

व्यापार मुक्त बाजार, सुधारों द्वारा भारत के आर्थिक परिवर्तन और विस्तार किए गए। वृद्धि की प्रतिस्पर्धा के अतिरिक्त धन, सूचना, औद्योगिकी के क्षेत्र और उच्च तकनीकी उद्योगों के लिए समर्थन, बुनियादी, ढाँचे में सुधार व्यापार निवेश, विदेशी पूँजी निवेश और गति में एक आर्थिक विस्तार की स्थापना। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भू–मंडलीकरण की महत्वपूर्ण उपकरण है। FDI एक प्रक्रिया है जिसके तहत् एक देश के निवासियों के दूसरे देश में एक फर्म के उत्पादन, वितरण और अन्य गतिविधियों को नियंत्रण करने के लिए सम्पत्ति के स्वामित्व प्राप्त है। [8]

1990 से 2000 के दशक में भारत में वैश्वीकरण से इसके निर्यात वृद्धि दर में कुछ वृद्धि हुई है। व्यापारिक निर्यात में मामुली वृद्धि 0.51 प्रतिशत से बढ़कर 1990 में 0.73 प्रतिशत हुई है। हालांकि सेवा क्षेत्र के निर्यात के संबंध में भारत का प्रदर्शन उपेक्षाकृत इसी अवधि के दौरान, बेहतर था। भारत के सेवा क्षेत्र के निर्यात में काफी 4.6 अरब $ से 1990 में 37.7 अरब $ की वृद्धि हुई है। भारतीय निर्यात अमेरिका से 1990–91 में 18.1 अरब $ था। 1994–95 में यह बढाकर 26.3 बिलियन $ और 2001–2002 में 43.8 अरब $ किया गया।[9]

विलियम जैफरसन बिल क्लिंटन 1990 के दशक के वे संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति हुए। बिल क्लिंटन जार्ज एच0डब्लू बुश को हराने के बाद 20 जनवरी 1993 को अमेरिकी राष्ट्रपति चुने गए। बिल क्लिंटन शीतयुद्ध के बाद पहले राष्ट्रपति हुए। न्यू डेमोक्रेट के रूप में क्लिंटन की नीतियों को उसके ''मध्यम मार्गी'' तीसरा रास्ता कहा गया। अमेरिका के इतिहासकारी और राजनीतिक वैज्ञानिकों के राष्ट्रपति के बाद अब ''रैंक'' औसत के अध्ययन के रूप में बिल क्लिंटन राष्ट्रपति के रूप में सामने आए। [10]

19वीं सदी में बिल क्लिंटन के शासन काल से ही वैश्वीकरण बड़े पैमाने पर शुरू हुआ। ''19वीं सदी से 20वीं सदी की और दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं और संस्कृतियों की कनेक्टीविटी का बहुत तेजी विकास हुआ। [11]

विशेष रूप से अमेरिका के वैश्वीकरण की भव्य रणनीति पहले से ही देशों के राज्यों का महत्व को कम करना, कम आंकना, सुपर वैश्वीक संस्थाओं के मुकाबले रही है। [12]

Clinton ran on the economic platform of blanching the budget, lowering inflation, lowering unemployment, and continuing the traditionally conservative policies of free trade. [13]

क्लिंटन का कहना है ''भारत वैश्वीकरण के मामले में क्या सोचता है इस पर एक केन्द्रीय बहस हो सकती है। कई लोगों का मानना है कि वैश्वीकरण की ताकत स्वाभाविक रूप से विभाजनकारी है यह अमीर और गरीब के बीच की खाई को और चौड़ा कर देगा जबकि बिल क्लिंटन ऐसा नहीं मानते हैं।'' [14] अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन के अनुसार यह बड़े और छोटे उत्पादकों के बीच की दूरी को कम करते हैं। इनके अनुसार यह तो विकासशील देशों के लिए अवसर है न सिर्फ अपनी गरीबी से बाहर आने का बल्कि अधिक लोगों को नेतृत्व प्राप्त करने का। क्लिंटन ने भारत में दिए अपने भाषण में यह भी कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था हमारे अपने लोगों को अधिक–अधिक काम दे रहा है। लोगों को गरिमा के साथ उनके परिवारों के जीवन स्तर को बढ़ाने का अवसर दे रहा है। [15]

क्लिंटन ने भारत में भाषण देते हुए कहा कि दुनिया के किसी भी भाग से ज्यादा परीक्षण वैश्वीकरण का एशिया में किया गया है। [16] क्लिंटन का कहना है कि व्यापार और निवेश में अपने सबसे बड़े भागीदार भारत का समर्थन देकर गर्व महसूस कर रहे हैं। [17]

निष्कर्ष–

भारत में उत्पादित माल का लंबे समय से दुनिया भर में निर्यात किया जाता है। इसलिए वैश्वीकरण की अवधारणा भारत के लिए नया नही है। [18]

2000 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने वैश्वीकरण के चार बुनियादी पहलुओं की पहचान की है – व्यापार और लेन–देन, पूंजी और निवेश आंदोलन, पलायन और लोगों की आवाजाही और ज्ञान का प्रसार आदि। [19]

वैश्वीकरण का विकास कभी भी आसानी से नहीं हुआ। 2000 के दशक का मंदी एक प्रभावशाली घटना थी। भू–मंडलीकृत समाज के बलों और कारकों ने लोगों को एक–दूसरे से अधिक से अधिक निकटता लाने में संस्कृतियों, बाजारों, विश्वासों और प्रथाओं ने एक जटिल वेब प्रदान किया है।[20]

अन्ततः वैश्वीकरण देश के राज्यों के महत्व को कम कर दिया है। सुपरनेशनल जैसी संस्थानों, यूरोपीय संघ, विश्व व्यापार संगठन, जी–8 था अन्तर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालयों की जगह राष्ट्रीय कार्यों का विस्तार और अन्तराष्ट्रीय समझौते का विस्तार हुआ है। [21]

सन्दर्भ– संकेत

(1) ''विश्व जनसंख्या'' सरिता राय, (29th January 2004)।
(2) ''वैश्वीकरण और भारतीय समाज पर इसके प्रभाव''। नलीनी आर (दिसम्बर 06, 2012)
(3) ''वैश्वीकरण और भारत में गरीबों की राजनीति'' एक लेख।
(4) जी–8 शिखर सम्मेलन; विकासशील देशों द्वारा कयोटोप्रोटोकोल फर्म IPS News, Net (07th July, 2005) 12 नवम्बर 2011 का पुनः।
(5) भारत; ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका– ''तीन की शक्ति'' Bilateral, Organisation, 21 नवम्बर, 2009.
(6) ''भारत और विश्व व्यापार संगठन'' 09th July 2005
(7) ''वैश्वीकरण और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश'' नागेश कुमार (2002) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।
(8) फनांडीस छोड़ने की पेशकश'' टाइम्स ऑफ इंडिया 21st May, 2014
(9) प्राइसवाटर हाउस कूपर्स ''बी0आर0आई0सी0 परे''।
(10) ''निबंध, लुकिंग परे शांति'' विलियम सेफायर (दिसम्बर, 6, 1993) न्यूयार्क टाईमस।
(11) ''वैश्वीकरण और विश्व इतिहास'' PDF, 03rd July 2012
(12) ''वैश्वीकरण के युग में आर्थिक नीति''। निकॉला स्काल्टे (2005) कैम्बिज यूनिवर्सिटी प्रेस I & B No. 521-54038
(13) संसद के भारतीय संयुक्त सत्र में राष्ट्रपति क्लिंटन के भाषण।
(14) संसद के भारतीय संयुक्त सत्र में, राष्ट्रपति क्लिंटन के भाषण, January 2000
(15) वही
(16) वही
(17) वही
(18) इंटरनेशनल बिजनेश, राकेश मोहन जोशी, ऑक्सफोड़ यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली और न्यूयार्क। ISB No. 195689097
(19) ''वैश्वीकरण : धमकी या अवसर'' अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (2000) 12 अप्रैल 2000, IMF प्रकाशन।
(20) ''संचार वैश्वीकरण ओर सामाजिक न्याय'' कैथरीन सोरेल (2012)
(21) ''अध्ययन – 6 : वैश्वीकरण और शासन''। वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण शुरूआत। पालग्रेव Schtte जन – Aart (2005)